A–0448

Total Pages : 3 **Roll No. .....**

MASL–505

M.A. Sanskrit (MASL)

वेद एवं निरूक्त भाग-2

Examination February, 2026

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट :– यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 2×19=38

नोट :– खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र की सन्दर्भ सहित विस्तृत व्याख्या कीजिए :

(क) यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।

सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते॥

(ख) अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्,

विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्

युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो,

भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम॥

2. दर्शन शब्द को स्पष्ट करते हुए भारतीय दर्शन के प्रमुख उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।

3. वेदांग किसे कहते हैं? वेदांगों को स्पष्ट करते हुए उनके महत्त्व पर विस्तृत प्रकाश डालिए।

4. उपनिषद् शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए उपनिषदों के वर्गीकरण एवं प्रतिपादन शैली पर विस्तृत प्रकाश डालिए।

5. वेदांगों के अन्तर्गत व्याकरण शास्त्र के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

अथवा

ईशावास्योपनिषद् की प्रमुख शिक्षाओं को अपने शब्दों में लिखिए।

खण्ड–ख

लघु उत्तरीय प्रश्न 4×8=32

नोट :– खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. पाणिनीय शिक्षा के अनुसार अधोलिखित उक्ति की विस्तृत समीक्षा कीजिए।

व्याघ्री यथा हरेत् पुत्रान् दंष्ट्राभ्यां न च पीडयेत्।

भीतापतनभेदाभ्यां तद्वद् वर्णान् प्रयोजयेत्॥

2. वेदांगों के अन्तर्गत निरूक्त शास्त्र के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

3. मुण्डकोपनिषद् में वर्णित परा एवं अपरा विद्या का वर्णन कीजिए।

4. तैत्तिरीयोपनिषद् के नाम औचित्य का प्रतिपादन कीजिए।

5. शिक्षा ग्रन्थों का वर्णन करते हुए चारों वेदों के शिक्षा ग्रन्थों पर प्रकाश डालिए।

6. भारतीय दर्शन में पूर्व मीमांसा एवं उत्तर मीमांसा के प्रभाव को प्रतिपादित कीजिए।

7. ईशावास्योपनिषद् के अनुसार निम्नलिखित में से किसी एक पर विस्तृत प्रकाश डालिए।

   (क) सम्भूत्यामृतमश्नुते।

   (ख) मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।

8. यजुर्वेद एवं अथर्ववेद से सम्बन्धित प्रमुख उपनिषद् ग्रन्थों का विस्तृत परिचय दीजिए।

अथवा

निम्नलिखित श्लोक का हिन्दी अर्थ लिखिए।

त्रिषष्टिश्चतुष्षष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः।

प्राकृते संस्कृते चापि स्वयं प्रोक्ता स्वयम्भुवा॥

****